**Gyan Manthan**
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

# टीकमगढ़ के धातुशिल्प का एतिहासिक और कलात्मक परिचय

***भारती देवी साहु***[1]
*डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविध्यालय सागर(म.प्र.)*
*ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग*

## Abstract

*वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों के समग्र विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने शिक्षा को केवल ज्ञान तक सीमित न रखकर विद्यार्थियों के मानसिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया है। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में परीक्षा चिंता एक सामान्य समस्या है, जो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि एवं समस्या समाधान क्षमता को प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन में इंदौर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में परीक्षा चिंता एवं समस्या समाधान क्षमता के विकास में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन, सकारात्मक सोच एवं तार्किक चिंतन का विकास करती है, जिससे परीक्षा चिंता कम होती है तथा समस्या समाधान क्षमता में वृद्धि होती है।*

**Keywords**:टीकमगढ़, धातुशिल्प, बेल मेटल, चौरासी बोरेला , घंटी, सिरे परदु

---

**प्रस्तावना**

## टीकमगढ़ के धातुशिल्प का परिचय

मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र का टीकमगढ़ जिला जो किसी समय ओरछा प्रदेश की राजधानी रहा है में एक अनोखी कला का नमूना देखने को मिलता है जो एक प्राचीन धातुशिल्प कला है। यह कला अपनी प्रामाणिकता और अनोखेपन के लिए जानी जाती है । इस कला को **बेल मेटल** कहा जाता है यह अपने नाम में तो अनोखापन लिये ही है साथ ही इसकी बनावट और धातुओ का मिश्रण इसे अन्य पारंपरिक धातुशिल्पों से अलग बनाता है। कुछ पारंपरिक कलाकारों से संवाद करके यह पता चला की इस पारंपरिक हस्तशिल्प कला का नाम बेल मेटल इस कारण हे की प्रारंभ में ये कलाकार आम जन जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का निर्माण करते थे जिसमे वर्तन,औजार, हथियार बनाते थे और बनाते थे घंटियाँ, घंटियाँ वे जिन्हें लोग अपने पशुओं को पहनाते थे जिन्हे **चौरासी, बोरेला, और घंटी** कहते थे। जैसा कि विदित है की प्राचीन काल से ही पारंपरिक खेती बेलों से की जाती थी यह किसानों का खेती करने का एक मात्र साधन था इस कारण किसानों का अपने पशुओं से स्नेह होना

स्वभाविक है किसान अपने पशुओं को इन्ही धातुशिल्पों की घंटियाँ पहनाते थे। बदलते समय के साथ किसानों के साथी कहे जाने वाले बेलों का स्थान ट्रेक्टरों ने ले लिया पर टीकमगढ़ के वो किसान जिन्होंने कभी अपने पशुओं के साथ अपने खेतों को जोता है उनका अनुभव बताता है की उस समय स्नेह पूर्वक वे अपने पशुओं को सजाते थे और जब उनके गले की घंटियों की ध्वनि उनके कानों में पड़ती थी तो वह उनके मन को एक आलोकिक आनंद देती थी। तरह तरह के आभूषण जैसे चौरासी, बोरेला, घंटी अपने पशुओं को पहनाना किसानों का क और इन धातु शिल्पकारों की आय का साधन था।शो

हैरानी की बात तो ये है की बुंदेलखंड मे होने के बाबजूद यह कला बुंदेलखंड की नहीं है। यह कला अयोध्या से बुंदेलखंड आई और टीकमगढ़ और आस पास के शहरों में यूं बस गई जैसे मान लो ये कला यहीं पनपी और यहीं विकसित भी हुई ।

इस कला का अभ्यास कलाकार लगभग 400 वर्षों से करते आ रहे हैं इसे भारत सरकार द्वारा 2008 मैं जी.आई. टेग भी दिया गया। पर खुद अपना इतिहास रखने बाली इस कला का कोई लिखित इतिहास नहीं है । मानो यह कला इतिहास के पन्नों मे लिखे जाने के अभाव मैं स्वयं का ही इतिहास खोती चली जा रही है । अब तो यंहा कुछ गिने चुने ही कलाकार रह गए है जो व्यवसायिक तौर पर नहीं वरन एक कलाकार के रूप मे काम कर रहे है । किसी ऐतिहासिक विषय मे लिखित साक्ष्य न होने पर उसका स्थान लोगों की मान्यताएं लेने लगती है और अपवाद शामिल होने लगते है गुजरते समय के साथ इस कला के रितिवत कलाकारों ने धनोपार्जन के अन्य साधन तलाशे और बदलते समय के साथ लोगों की बदलती रूचि के अनुसार उन कलाकारों का स्थान गैर परंपरा गत कलाकारों ने ले लिया ।

अब यह जानना की कौन परंपरागत कलाकार है और कौन गैर परंपरागत कलाकार यह एक कठिन कार्य है क्युंकी गैर परंपरागत कलाकार भी समय के लंबे अंतराल से इस विधा में प्रयासरत है। परंतु टीकमगढ़ के परंपरागत सोनी परिवार के कलाकार लंबे समय से टीकमगढ़ और दतिया मैं काम कर रहे है।

धातु शिल्प का कार्य करने वाले ये कलाकार अवधिया समुदाय के सुनार कहे जाते है जिन्हे स्थानीय भाषा में सोनी कहा जाता हें। प्रारंभ मे ये कलाकार दैनिक उपयोग की वस्तुएं, धार्मिक वस्तुए, खिलौने बनाते थे बदलते समय के साथ ये कलाकार आय के अन्य साधन तलासने के उदेश्य से मूर्तिकला का कार्य छोड़ अन्य कामों में जुट गए जैसे आभूषण और कुछ कलाकार इसके विपरीत भी आय के अन्य साधन तलाशने हेतु विस्थापित हो गए परंतु अभी भी कुछ कलाकार इस कला को सँजोने का प्रयास कर रहे हैं टीकमगढ़ के रामभरोसे सोनी, लक्ष्मीनारायण सोनी और हरीश सोनी भी इन्ही कलाकारों में से एक है।

**ऐतिहासिक प्रस्टभूमि**

यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो धातु शिल्प का पहला उदाहरण सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त नर्तकी की मूर्ति है जिसे ढलाई की खोई हुई मोम तकनीक से बनाया गया जिसके उदाहरण बस्तर की ढलाई तकनीक है। आमतौर पर देखा जाए तो टीकमगढ़ का धातुशिल्प भी इसी श्रेणी मैं ही आता है। परंतु यह कला बस्तर की कला से कैसे भिन्न है इस प्रश्न का उत्तर इन दोनों की तकनीक मे है जो इन्हे न केवल एक दूसरे से अलग करता है बल्कि इन्हे एक अलग पहचान भी देता है। ढोकरा ढलाई सामान्यतः सिरे परदु तकनीक से ही बनाई जाती है परंतु इसमे अन्य धातुओं को भी मिलाया जाता है जबकि बेल मेटल मे पीतल मुख्य धातु होती है यहाँ तक कि इनकी तकनीक मे भी बहुत अंतर है जहां ढोकरा ढलाई मे कई चरण होते है वही बेल मेटल की प्रक्रिया मे कम स्तर एवं सरल है साथ परंपरगत तौर पर इस कला के कलाकार सोनार जाती के है जबकि ढोकरा कलाकार आदिवासी समुदाय से संबंधित है। ढोकरा ढलाई पर शोधकर्ताओं द्वारा अध्ययन किया गया है इसके विषय मैं पर्याप्त

जानकारी उपलब्ध है परंतु जिस प्रकार बुन्देलखड़ क्षेत्र अपने समूचे विकास मैं पीछे रह गया है ऐसा मालूम होता है की यह क्षेत्र अपने कलात्मक इतिहास को प्रमाणित करने मैं भी पीछे रह गया है।
इस कला के कलाकार स्वयं को औदहिया या अवधिया सोनार कहते हैं। ये मूर्तियाँ स्वर्णकार समाज द्वारा बनाई जाती है। सुनार जाती द्वारा प्राचीन काल से ही मंदिरों की मूर्तियाँ किले गुंबद की सजावट गुंबद के काल से दीवालों की नक्काशी महिलाओ के जेबर आभूषण जैसी जटिल एवं मनमोहक कारीगरी को साकार किया जाता रहा है । इसके साथ ही ये तोपे , तलववार, बानते थे। ये कलाकार न केवल मूर्तियाँ अपितु परंपरागत और अनुष्ठानिक सामग्री भी बनाते थे जैसे वर्तन जिनमें खिचड़ी का बेला, घड़ियन घुल्ला आदि शामिल हैं।

**धातुशिल्प निर्माण की प्रक्रिया**

टीकमगढ़ धातुशिल्प निर्माण की प्रक्रिया-

**1. गाबो-** यह शिल्प निर्माण का पहला चरण है, जिसमें मूर्ति का साँचा तैयार किया जाता है। यह मिट्टी का एक एक ऐसा साँचा होता हे जिसके ऊपर आगे की प्रक्रिया की जाती है।

**2.कपो-** गाबो निर्माण के बाद चिकनी मिट्टी के घोल की एक पतली परत गाबो पर चढ़ाई जाती है।

**3.मेन पिसवा-** कपो के सुख जाने के बाद मोम की परत चढ़ाई जाती है। जिसमें तय अलंकरण को कपो के ऊपर बारीकी से गढ़ा जाता है।

**4. गारंग-** इसके बाद मिट्टी की परत चढ़ाई जाती है। अलंकरण पूरी तरह से मिट्टी की परतों से ढक दिया जाता है।

**5. चुंगी लगाना-** अब इसमें चुंगी लगाई जाती है। यह वह स्थान हे जिससे मोम पिघलकर निकलती है। फिर इसे सुखाया जाता है फिर भट्टी तैयार की जाती है गरम साँचों में पिघली हुई धातु डाली जाती है और इसे ठंडा होने के लिए छोड़ दिया जाता है ठड़ा होने के बाद इसे तोड़ कर मूर्ति की सफाई की जाती हे इस प्रकार मूर्ति तैयार की जाती है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

भारतीय ज्ञान परंपरा में मूर्तिकला मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं वरन यह साधन हे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्राचीन काल से ही लोग चित्रकला, मूर्तिकला के माध्यम से अपने धर्म, सामाजिक स्थति और संस्कृति को व्यक्त करते आ रहे हैं परंतु कला का उपयोग यहीं तक ही सीमित नहीं रहा है बल्कि यह तात्कालिक समाजिक, धार्मिक स्थति को भी दर्शाती है जो अतीत और वर्तमान के विकास के क्रम को बताती है। यह बताती है कि भारत का ज्ञान किस प्रकार से प्राचीन काल से ही प्रत्येक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण रहा है। टीकमगढ़ का धातुशिल्प मात्र कला नहीं अपितु यह एक पारंपरिक ज्ञान है जो संस्कृति धर्म और आस्था से जुड़ा हुआ है।
यह धातुशिल्पों को पारंपरिक तकनीक से बनाये जाने वाले शिल्पकला के ज्ञान का संरक्षण करेगा। व्यावहारिक तौर पर भी यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित कला है जो गुरु शिष्य परंपरा का पालन करती है जिसमे पारंपरिक तकनीक का पालन करते हुए बिना किसी मशीनी सहायता के शिल्प का निर्माण किया जाता है।
वर्तमान में ये कलाकार पारंपरिक तकनीक से शिल्प निर्माण कर रहे है और इन्हे देश विदेश में बेचकर अपनी आय अर्जित कर रहे है जिसमें इन्हे सरकार से सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। जैसे समय समय पर कार्यशालाओं का आयोजन, मूर्तिशिल्प बेचने के लिये उचित मंच जैसे मृगनयनी जहां इस तरह के पारंपरिक कलाकृतियों को खरीदा जा सकता है जिसका सीधा लाभ कलाकारों को प्राप्त होता है।

इस धातु शिल्प की यह विशेषता है की इस धातुशिल्प का एक जैसा कोई दूसरा नमूना नहीं होता क्यूंकि एक मूर्तिशिल्प बनने के बाद साँचा टूट जाता है, इसी कारण इसे सिंगल मोल्ड कास्टिंग कहा जाता है। यह तकनीक इसके हर एक शिल्प को अनोखा बनाती है। इस शिल्प के निर्माण में कलाकार बिना किसी विशेष मशीनी उपकरण से पारंपरिक तकनीक के माध्यम से करता है। यह प्रक्रिया बहुत मेहनतकश और जटिल होती है जिसमे शिल्प का साँचा बनाने से लेकर भट्टी में उसे पकाने तक लेकर बहुत ही बारीकी और सावधानी से सम्पूर्ण प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है।
प्राचीन काल से ही भारत में मूर्तिकला का निर्माण किया जाता आ रहा है प्राचीन काल से ही लोग देवी देवता, खिलौने, उपयोगी वस्तुएं बनाकर अपनी आय अर्जित करते आयें है जैसे चोल कालीन मूर्तियाँ कला और उपयोग की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।
टीकमगढ़ धातु शिल्प की तकनीक अद्वितीय उत्पाद बनाने के लिए प्रसिद्ध है जो इसे महत्वपूर्ण बनाते है।
इस शोध में चार प्रकार कि शोध सामग्री का संग्रह किया गया है जिसके बिन्दु इस प्रकार है-

1. प्राथमिक शोध सामग्री - प्राथमिक शोध सामग्री प्राप्त करने के लिये कलाकारों से साक्षात्कार किया गया, कार्य स्थल का अवलोकन किया गया, प्रश्नावली तैयार कर कलाकारों से बातचीत की गई।
2. द्वितीयक शोध सामग्री- टीकमगढ़ के इतिहास और कला से संबंधित पुस्तके, शोध पत्रिका, सरकारी रिपोर्ट पुराने दस्तावेजों का अध्ययन किया गया।
3. गुणात्मक शोध सामग्री- कलाकारों से वार्तालाप कर उनके विचारों का अध्ययन, परंपराओं, रीति रिवाजों, का अध्ययन किया गया।
4. मात्रात्मक शोध सामग्री- इस शोध में लगभग 40 से अधिक परंपरागत और गैर-परंपरगत कलाकारों का डेटा संग्रहीत कर उनसे शोध संबंधित प्रश्न पूछे गए।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

इसके साथ ही अन्य माध्यमों जैसे संग्रहालय से और अवलोकनों से भी शोध सामग्री प्राप्त करने प्रयास किया गया।

अतः इस शोध का उदेश्य भारतीय ज्ञान परंपरा मे नई शिक्षा नीति के तहत धातुशिल्प की प्राचीन तकनीक के ज्ञान के महत्व को बताना है। मूर्तिकला मात्र सजावट की वस्तु नहीं है वरन यह उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति, मान्यताओं, का प्रतीक होती है। टीकमगढ़ के कलाकार ना सिर्फ भारत बल्कि विदेशों में भी अपनी कला को पहुचाने का प्रयास कर रहे है इस शोध का उदेश्य इस कला और कलाकारों के महत्व को समझा जाए और इसे भारतीय ज्ञान के आधुनिक क्षेत्र में भी स्थान दिया जाए। टीकमगढ़ का धातुशिल्प अपनी पहचान बनाने में प्रयासरत है। यह शोध कलाकार और भविष्य के मूर्तिकारों के ज्ञानोपार्जन में सहायता करेगा।

बैलगाड़ी

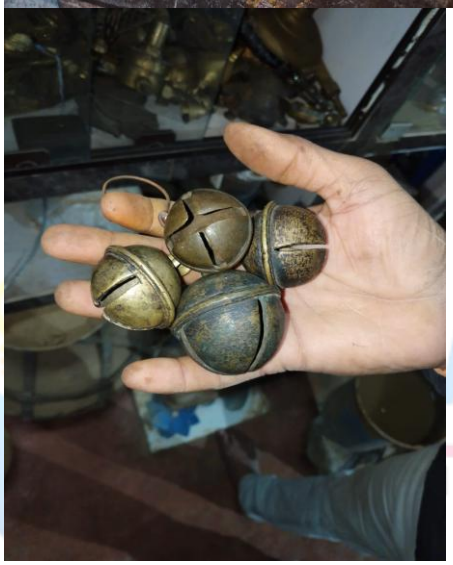

चौरासी

N MANTHAN
SCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

## *संदर्भ*

●डॉ. अंजली पांडे. मेटल आर्ट ऑफ टीकमगढ़ HOD, Drawing and Painting Maharani Lakshmi Bai Govt. Girls PG Autonomous College Bhopal, Madhya Pradesh, India, 2023
●राज सविप, डोकरा धातु शिल्प विधान एवं समकालीन भारतीय मूर्तिकारों पर इसका प्रभाव, 2024, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविध्यालय
●कमलदेवी चटोपाध्याय, इंडियन क्राफ्ट ट्रडिशन, (1980)
●बुंदेलखंड संस्कृति, अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'(2004)
●बुंदेलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास, नर्मदा प्रसाद गुप्त,(1995)